मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त [मर्टन]

मर्टन के मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त को ज्ञानमीमांसात्मक कहते हैं क्योंकि यह ज्ञान के तर्कशास्त्र और सिद्धान्त से ताल्लुक रखता है। किसी भी सिद्धान्त को जानने के लिये कई चीजें आवश्यक होती हैं। दर्शनशास्त्र में दो चीजें बतायी गई हैं - ONTOLOGY ~~ONTOMOLOGY~~
- APISTIMOLOGY

ONTOLOGY किसी प्रकार की वास्तविकता को उजागर करता है। APISTIMOLOGY ज्ञान को प्रतिपादित करने का एक तर्क होता है। वस्तुतः मर्टन का मध्यसीमावर्ती सिद्धान्त एक ज्ञान मीमांसात्मक स्वरूप है

समाजशास्त्र में एक ओर अति व्यापक - वृहत और बड़े-2 सिद्धान्त हैं तो दूसरी ओर अति सूक्ष्म - छोटे-2 निम्न सिद्धान्त हैं जिन्हें सिद्धान्त कहना भी उपयुक्त नहीं होगा। बल्कि उनको एक अध्ययन कहा जा सकता है। इस प्रकार समाजशास्त्र में अध्ययन की दो धारायें प्रमुख रूप से प्रचलित रही हैं।

महान, बड़े या वृहत सिद्धान्त पूरे समाज को समग्र मानकर अध्ययन करते हैं और समग्र समाज के संदर्भ में ही निर्मित होते हैं या किये जाते हैं। इस प्रकार के सिद्धान्तों में, स्थिति और समय आयाम, दोनों ही निहित हैं। पारसंस का सामाजिक क्रिया का सिद्धान्त वृहद सिद्धान्त का एक अत्यंत महत्वपूर्ण उदाहरण है और पारसंस ने इसी आधार पर वृहत सिद्धान्तों की वकालत की है। इसके अतिरिक्त मार्क्स का सिद्धान्त भी वृहत सिद्धान्त का उदाहरण है जिसे किसी भी समय और स्थिति के आयाम में लागू किया जा सकता है।

कोई भी वृहत सिद्धान्त प्रस्थापनाओं का वह समुच्चय होता है जो कि जहाँ उद्गत हुआ है उससे परे लागू किया जा सके। यदि कोई सिद्धान्त भारत में बना है और उसे भारत से बाहर कहीं भी लागू किया जा सकता है तो वृहत सिद्धान्त होगा।

सूक्ष्म सिद्धान्त या अध्ययन उनको कहते हैं जैसे एक गाँव का अध्ययन, एक परिवार का अध्ययन, एक ईकाई का अध्ययन जो केवल एक समय और स्थिति में लागू किये जायें, ऐसे अध्ययनों को सूक्ष्म स्तरीय अध्ययन कहलाते हैं।

समाजशास्त्र में उपर्युक्त अध्ययन की दो धारायें हैं एक अति वृहत धारा दूसरी अति सूक्ष्म। मर्टन ने यह बताया कि इन दोनों धाराओं के मध्य ~~भी~~ अध्ययन या सिद्धान्त बनाये जा सकते हैं। यह सिद्धान्त न तो अति वृहत हैं और न ही अति सूक्ष्म। ये तो समाज के किसी एक या दो पक्षों का अध्ययन करते हैं सम्पूर्ण

पक्षों का विश्लेषण नहीं। मर्टन के अनुसार मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त सार्वभौमिक होते हैं, सामान्यीकृत होते हैं। अर्थात एक से अधिक समय और स्थिति आयामों में लागू किये जा सकते हैं।

मर्टन के अनुसार दुर्खीम का आत्महत्या सिद्धान्त, कोई भी धर्म का सिद्धान्त, सामाजिक गतिशीलता का सिद्धान्त, सापेक्षवंचन का सिद्धान्त संदर्भ समूह सिद्धान्त, सामाकलन सिद्धान्त, भूमिका सिद्धान्त आदि।

मर्टन के अनुसार समाजशास्त्र में अभी परिपक्व और अनुभव सिद्ध तत्वों की कमी के कारण वृहत सिद्धान्तों का निर्माण नहीं किया जा सकता। चूँकि समाजशास्त्र अभी एक नया विज्ञान है और जो वैज्ञानिकता की प्राप्ति के लिये संघर्षरत है, इसमें भौतिक विज्ञानों की अपेक्षा अभी उतना काम नहीं किया गया है। इस लिये आवश्यक है कि समाजशास्त्री अभी मध्य सीमावर्ती सिद्धान्तों पर अपना ध्यान टिकायें और फिर एक क्रम में वृहत सिद्धान्तों के निर्माण की ओर अग्रसर हो।

मर्टन एक अन्य आधार पर भी मध्य सीमावर्ती सिद्धान्तों की वकालत करते हैं जो मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त की एक प्रमुख विशेषता भी है। मर्टन का मानना है कि मध्य सीमावर्ती सिद्धान्तों का निर्माण करके उन्हें एक सूत्र में पिरोया जा सकता है जिससे समाजशास्त्र में वृहत सिद्धान्तों के निर्माण के लिये रास्ता साफ हो जायेगा।

यदि समाजशास्त्र में मर्टन के समर्थकों ने मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त के निर्माण पर बल दिया है तो दूसरी ओर प्रकार्यवादी पारसंस ने और इनके समर्थकों ने इसकी आलोचना की है।

रोबर्ट बिरस्टीड ने मध्य सीमावर्ती सिद्धान्तों की दो आलोचनायें प्रस्तुत की हैं।

इनका मानना है ये एक प्रकार की परिकल्पनायें हैं न कि सिद्धान्त सिद्धान्त से बीरस्टीड का तात्पर्य एक प्रणाली से है, अवधारणाओं की योजना से है लेकिन मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त मात्र एक अवधारणा या परिकल्पना ही प्रतीत होते हैं।

बीरस्टीड का कहना है अगर यह मान लिया जाये कि मध्यसीमा वर्ती सिद्धान्त, सिद्धान्त है तो भी इनकी आकांक्षायें ज्यादा नहीं है ये छोटी मोटी घटनाओं का अध्ययन करते हैं। इनके उद्देश्य सीमित हैं जबकि सिद्धान्तों की वृहत आकांक्षायें होती हैं और उनके उद्देश्य तथा कार्यक्षेत्र वृहत होते हैं।

अन्य विचारकों ने मध्य सीमावर्ती सिद्धान्तों को अनाम किस्म के सिद्धान्त माना है। उनके अनुसार यह बहुत संकीर्ण है

इससे किसी एक घटना की व्याख्या हो सकती है लेकिन घटनाओं के अंतःसम्बंधों का परीक्षण नहीं हो सकता है। उदाहरण के लिये संस्कृतीकरण का सिद्धान्त

मर्टन ने उपर्युक्त आलोचनाओं पर प्रतिक्रिया व्यक्त की और कहा कि मध्यवर्ती सीमा सिद्धान्त हमारे लिये नये नहीं है। बल्कि इसकी गहन ऐतिहासिक जड़े है। बेकन ने विज्ञान में Middle Axioms की चर्चा की है उसी प्रकार बाद में मैनहाइम ने Principia media की चर्चा की। Adolf Lowi ने आर्थिक और सामाजिक प्रक्रियाओं को जोड़ने के संदर्भ में Sociological Middle Principle का उल्लेख किया है। ये अनेक उदाहरण यह प्रस्थापित करते है कि हमारे पूर्वजो ने भी मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त की चर्चा की थी।

मर्टन ने यह भी कहा कि समाजशास्त्र में अभी वृहत सिद्धान्तो के निर्माण के लिये अनुकूल परिस्थितियाँ नहीं है इसलिये मध्य सीमावर्ती सिद्धान्तो से ही काम चलाना होगा। मध्यसीमावर्ती सिद्धान्त शोध के लिये नयी दिशाओं को उजागर करते है। जबकि वृहत सिद्धान्त दिशाओं को संकुचित करते है। मर्टन इस बात को स्वीकार करते है कि मध्य सीमावर्ती सिद्धान्तो के कारण सामाजिक शोध में अराजकता की स्थिति पैदा हो गई है। लेकिन फिर भी इसने शोध के लिये, परिकल्पनाओं के निर्माण के लिये नयी दिशाओं की खोज की है। मर्टन का यह भी मानना है कि अनेक मध्य सीमावर्ती सिद्धान्तो को व्यवस्थित करके एक वृहत सिद्धान्त का निर्माण किया जा सकता है। इस दिशा में मध्यसीमावर्ती सिद्धान्तों ने वृहद सिद्धान्तों के लिये रास्ता साफ किया है।

Scanned with CamScanner